प्रातः क्लास 11/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। बाप बच्चों से पूछते रहते हैं– हरेक बच्चों को अपने से पूछना है कि बाप से सभी कुछ मिला? किस-2 चीज़ में कमी है? हरेक को अपने अन्दर झाँकी पहननी है। जैसे नारद का मिसाल है। उनको कहा– तुम अपनी सिकल आईने में देखो, ल॰ को वरने लायक हो? तो बाप भी बच्चों से पूछते हैं– क्या समझते हो, ल॰ को वरने लायक बने हो? अगर नहीं, तो क्या-2 खामियाँ हैं जिनको निकालने लिए बच्चे पुरुषार्थ करते हैं? खामियों को निकालने का पुरु॰ करते हैं वा करते ही नहीं है? कोई-2 तो पुरु॰ करते रहते हैं। नए-2 बच्चों को भी समझाया जाता है अपने अन्दर में देखो कोई खामी तो नहीं है; क्योंकि तुम सभी को परफेक्ट बनना है। बाप आते ही हैं परफेक्ट बनाने लिए; इसलिए एम-ऑबजेक्ट का चित्र भी सामने रखा है। अपने अन्दर से पूछो हम इन जैसे परफेक्ट बने हैं? जो जिस्मानी पढ़ाई पढ़ाने वाले टीचर देखते हो, इस समय विकारी हैं। यह सम्पूर्ण निर्विकारियों का सैम्पल है। आधा कल्प तुमने इन्हों की महिमा की है। तो अब अपने से पूछो हमारे में क्या-2 खामियाँ हैं, जिसको निकाल हम अपनी उन्नति करें और बाप को बतावें कि बाबा यह खामी है जो हमसे निकलती नहीं है। कोई उपाय बताओ। बीमारी सर्जन द्वारा ही छूट सकती है ना। कोई-कोई सहायक सर्जन भी होते हैं, डॉक्टर से कम्पाउंडर सीखते-2 होशियार डॉक्टर बन जाते हैं। तो ईमानदारी से अपनी जाँच करो, मेरे में क्या-2 खामियाँ हैं, जिस कारण मैं समझता हूँ यह पद पा नहीं सकूँगा? बाप तो कहेंगे ना तुम इन जैसा बन सकते हो। खामियाँ बतावें तब बाप राय दे। बीमारी तो बहुत है। कोई-2 में बहुत क्रोध है, लोभ है फालतू या कुछ ज्ञान की धारणा नहीं हो सकती तो कोई को धारणा करा सके। बाप रोज़-2 बहुत समझाते हैं। वास्तव में इतने समझाने की ज़रूरत ही नहीं दिखती। मंत्र का अर्थ भी बाप समझा देते हैं। बात तो एक ही है। बेहद के बाप को याद करना है और उनसे वर्सा पाकर हमको ऐसा बनना है। और स्कूलों में 5 विकारों को जीतने की बात ही नहीं होती। यह बात अभी ही होती है, जो बाप आकर समझाते हैं। तुम्हारे में जो भूत हैं, जो दुख देते हैं, उनका वर्णन करेंगे तो उनको निकालने की युक्ति बाप बतावेंगे। बाबा यह-2 भूत हमको तंग करते हैं। भूल निकाल(ने) वाले के आगे वर्णन किया जाता है ना। तुम्हारे में कोई वह भूत नहीं। तुम जानते हो यह 5 विकारों रूपी भूत जन्म-जन्मांतर के हैं। देखना चाहिए हमारे में क्या भूत है? उनको निकालने लिए फिर राय लेनी चाहिए। आँखें भी बहुत धोखा देने वाली हैं। इसलिए बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। दूसरों को भी आत्मा समझने की प्रैक्टिस डालो। इस युक्ति से तुम्हारी यह बीमारी निकल जावेगी। हम सभी आत्माएँ हैं, तो भाई-2 ठहरे ना। शरीर तो हैं नहीं। यह भी जानते हो हम सभी आत्माएँ वापस जाने वाली हैं। तो अपन को देखना है, सर्वगुण सम्पन्न बने हैं, नहीं तो हमारे में क्या अवगुण है? तो बाप भी उस आत्मा को बैठ देखते हैं, इनमें यह खामी है, तो उनको बैठ करेन्ट देंगे इस बच्चे का यह विघ्न निकल जाए। अगर सर्जन से ही छिपाते रहेंगे तो कर क्या सकते। तुम अपनी अवगुण बताते रहेंगे तो राय बाप देंगे। जैसे तुम आत्माएँ बाप को याद करते हो– बाबा आप कितने मीठे हो, हमको क्या से क्या बना देते हो। बाप को याद करते रहेंगे तो भूत भागते रहेंगे। कोई न कोई भूत है ज़रूर। बाप सर्जन को बताओ, तो बाबा हमको इनकी युक्ति बताओ नहीं तो बहुत घाटा पड़ जावेगा। यह छोट(ा)-मोटा भूत निकलता ही नहीं है, तो बहुत घाटा पड़ जावेगा। सुनाने से बाप को भी तरस पड़ेगा, यह माया के भूत इनको तंग करते हैं। भूतों को भगवाने वाला तो एक ही बाप है। युक्ति से भगाते हैं। समझाया जाता है इन भूतों को भगाओ। फिर भी यह भूत नहीं भागते हैं। कोई में विशेष रहता है, कोई में कम; परन्तु है ज़रूर। बाप देखते हैं इनमें यह भूत है। दृष्टि देने समय अन्दर चलता है ना यह बहुत अच्छा बच्चा, और तो सभी इनमें अच्छे-2 गुण हैं; परन्तु बोलते कुछ नहीं हैं, किसको समझा नहीं सकते हैं। माया ने जैसे गला ही बन्द कर दी है। इनकी गला खुल जाए तो औरों की भी सर्विस करने लग पड़ेंगे। दूसरों की सर्विस माना अपनी सर्विस, शिवबाबा की सर्विस नहीं करते हैं। शिवबाबा खुद सर्विस करने आए हैं।

कहते हैं इन जन्म-जन्मांतर के भूतों को भगाना है। बाप बैठ समझाते हैं। यह भी जानते हैं, झाड़ धीरे-2 वृद्धि को पाता है। छनते भी रहते हैं। माया विलारा डाल देती है। बैठे-2 ख्याल बदली हो जाता है। जैसे सन्यासियों को घृणा आती है तो एकदम घर छोड़कर चले जाते हैं। यह भी माया ऐसा परछावा डालती है जो एकदम गुम हो जाते हैं। न कोई कारण, न कोई बात। कनेक्शन तो सभी का बाप के साथ है। बच्चे तो नम्बरवार हैं। वह भी बाप को सच बतावें तो वह खामियाँ निकल सकती हैं और ऊँच पद पा सकते हैं। बाप जानते हैं, कई न बतलाने कारण अपन को बहुत घाटा डालते हैं। कितना भी समझावें; परन्तु वह काम करने बिगर रह न सकेंगे। माया पकड़ लेती है। माया रूपी अजगर है। सभी को पेट में डाल बैठी है। दुबण में गले तक फँसे हुए हैं। बड़े-2 पंडित आदि हैं अपनी पंडिताई में ही मस्त रहते हैं। दूसरी कोई बात सुनते ही नहीं। कितना बाप समझाते हैं और कोई बात ही नहीं। सिर्फ बोलो दो बाप हैं। एक लौकिक बाप तो सदैव मिलता ही है। सतयुग में भी मिलता है तो कलियुग में भी मिलता है। ऐसे नहीं कि सतयुग में फिर पारलौकिक बाप मिलता है। पारलौकिक बाप तो एक ही बार आते हैं। पारलौकिक बाप आकर नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। उनकी भक्तिमार्ग में कितनी पूजा करते हैं, याद करते हैं। शिव के मंदिर तो बहुत हैं। बच्चे कहते हैं सर्विस नहीं है। अरे, शिव के मंदिर तो जहाँ-तहाँ हैं, वहाँ जाकर तुम पूछ सकते हो इनको क्यों पूजते हैं? यह शरीरधारी तो नहीं है। यह है कौन? कहेंगे– परमपिता परमात्मा। इन बिगर और कुछ कहेंगे नहीं। तो बोलो– यह परमात्मा बाप है ना। इनको खुदा भी कहते हैं, अल्ला भी कहते हैं। अक्सर (कर)के परमपिता परमात्मा कहा जाता है। उनसे क्या मिलने का है, यह कुछ भी पता है नहीं। वह घर से सभी को भेज देते हैं वा यहाँ आते हैं। भारत में ही शिव का नाम तो बहुत लेते हैं। शिवजयन्ती त्योहार भी मनाते हैं। कोई को भी समझाना बहुत सहज है। बाप भिन्न-2 प्रकार से समझाते बहुत ही रहते हैं। तुम किसके पास भी जा सकते हो; परन्तु बहुत ठण्डाई से, नम्रता से बात करनी चाहिए। तुम्हारा नाम तो भारत में बहुत फैला हुआ है। थोड़ी ही बात करेंगे तो साधु-सन्यासी सभी समझ जावेंगे। यह ब्रह्माकुमारियाँ हैं। बहुत इनोसेन्ट भी हैं। गाँव आदि तरफ तो बहुत हैं। तो फॉरेन में जाकर सर्विस करनी चाहिए। बहुत सहज है। आओ, तो हम तुमको शिवबाबा की जीवन कहानी सुनावें। तुम शिव के पुजारी हो, इनसे क्या माँगते हो? हम आपको इनकी पूरी जीवन कहानी बता सकते हैं। दूसरे दिन फिर ल॰ना॰ के मंदिर में जाओ। तुम्हारे अन्दर में खुशी रहती है। बच्चे चाहते हैं गाँवड़ों में सर्विस करें। सभी की अपनी-2 समझ है ना। बाप कहते हैं पहले-2 जाओ शिवबाबा के मंदिर में, फिर ल॰ना॰ के मंदिर में। जाओ, पूछो– इन्हों को यह वर्सा कैसे मिला? आओ तो हम ल॰ना॰ के 84 जन्मों की जीवन कहानी सुनावें। शिवबाबा की जीवन कहानी अलग है, ल॰ना॰ की अलग है। 84 जन्मों की कहानी मनुष्य का कहना राँग हो जाता है। देवी-देवताओं के 84 जन्मों की कहानी कहना राइट है। वह भी ल॰ना॰ से ही सिद्ध होगी। आओ तो हम इनके 84 जन्मों की जीवन कहानी सुनावें। गामरे वालों को भी जगाना है। तुम जाकर प्यार से समझावेंगे, तुम आत्मा हो। आत्मा ही बात करती है। शरीर तो खत्म हो जाने वाला है। अभी हम आत्माओं को पावन बन बाप के पास जाना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो सुनने से ही वह कशिश होगी। जितना तुम देही-अभिमानी होंगे उतना ही तुम्हारे में कशिश आवेगी। अभी इतना इस देह आदि से, पुरानी दुनिया से पूरा वैराग्य नहीं आया है। यह तो जानते हो यह पुराना चोला छोड़ना है। क्या ममत्व इनमें रखना है। शरीर होते हुए शरीर में कोई ममत्व न होना चाहिए। अन्दर में यही तात रहे अभी हम आत्माएँ अपने घर जावेंगे। पावन बन कर घर जावेंगे। फिर यह भी दिल होती है ऐसे बाबा को कैसे छोड़े! ऐसा बाबा तो फिर कब मिलेगा नहीं। तो ऐसे-2 ख्याल करने से बाप भी याद आवेंगे, घर भी याद आवेगा। अभी हम घर जाते हैं। तुम समझते हो हमारे अभी 84 जन्म पूरे होते हैं। दिन में भल अपना धंधा आदि करो। गृहस्थ व्यवहार में तो रहना ही है। उसमें रहते हुए भी तुम .....

में यह रखो कि यह तो सभी खत्म हो जाना है। अभी हमको वापस अपने घर जाना है। बाप ने कहा है गृहस्थ व्यवहार में भी ज़रूर रहना है, नहीं तो कहाँ जावेंगे। धंधा आदि भल करो। बुद्धि में यह याद रहे, यह तो सभी कुछ विनाश होना है। पहले हम घर जावेंगे फिर सुखधाम में आवेंगे। जो भी टाइम मिले अपन से बात करनी चाहिए। बहुत टाइम है। आठ घंटा धंधा आदि करो। आठ घंटा आराम भी करो। बाकी आठ घंटा बाप से यह वार्तालाप करो। रूह-रूहान करनी है। रूह-रूहान कर फिर जाकर रूहानी सर्विस करनी है, जितना भी समय मिले। शिव के मंदिर में, ल॰ना॰ के मंदिर में तुमको बहुत मिलेंगे। राम-सीता के मंदिर में इ(त)ना नहीं। तुम कहाँ भी जावेंगे तो शिव के मंदिर ज़रूर होगा। दूसरा कोई विचार कर जाते नहीं। तो तुम बच्चों के लिए मुख्य है याद की यात्रा। याद में अच्छी रीत रहेंगे तो तुम जो भी माँगो मिल सकता है। प्रकृति दासी बन जाती है। उनके सिकल आदि भी ऐसे कशिश वाले रहते हैं। कुछ भी माँगने की दरकार नहीं। सन्यासी में भी कोई-2 बहुत पक्के होते हैं। बस, इसी निश्चय में बैठते हैं, हम ब्रह्म में जाकर लीन होंगे। इस निश्चय में बहुत पक्के रहते हैं। फिर ऐसे बैठे-2 समझते हैं हम जाते हैं। कितना उन्हों का अभ्यास होता है। मालूम पड़ता है हम इस शरीर को छोड़ जाते हैं; परन्तु वह तो राँग रास्ते पर। बड़ी मेहनत करते हैं ब्रह्म में लीन होने लिए। भक्तिमार्ग में दीदार के लिए कितनी मेहनत करते हैं। जीवन भी दे देते हैं। आत्मघात नहीं होता। जीवघात होता है। आत्मा तो है ही। वह जाकर दूसरा शरीर अथवा जीव लेती है। तो तुम बच्चे सर्विस का अच्छी रीत शौक रखो, तो बाप भी याद आवेंगे। यहाँ भी मंदिर आदि बहुत हैं। तुम योग में पूरा रहकर किसको कुछ भी कहेंगे, कोई विचार नहीं आवेगा। योग वाले का तीर पूरा लगेगा। तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। कोशिश कर देखो; परन्तु पहले अपने अन्दर को देखना है, हमारे में माया का कोई भूत तो नहीं है? माया के भूत वाले थोड़े ही सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। सर्विस तो बहुत है। बाबा तो नहीं जा सकते हैं ना; क्योंकि बाप साथ में है। बाप को कहाँ किचड़े में ले जावें? किसके साथ बोलें? बड़े आदमी कब मेहतर आदि से नहीं बोलने चाहते। बाप भी बच्चों से ही बोलने चाहते हैं। बाकी तो सभी मनुष्य मेहतर से, जानवरों से भी बदतर हैं। तो बच्चों को सर्विस करनी है। गायन भी है सन शोज़ फादर। कई बच्चे कहते हैं, बाबा बाहर नहीं जाते। अरे, बाबा क्या जाकर करेंगे? बाप ने तो बच्चों को होशियार बनाया है। अच्छे-2 बच्चे हैं जिनको सर्विस का शौक रहता है। जैसे एक कमिटी दिल्ली में बनी है, भल कुछ भी है, चांस माँगते हैं, हम गामड़े जाकर सर्विस करेंगे। बाबा कहते हैं भल जाओ। सिर्फ बाबा खुद फोल्डिंग चित्र बना रहे हैं। चित्रों बिगर किसको समझाना डिफीकल्ट लगता है। रात-दिन यही ख्यालात रहती है, हम औरों का जीवन कैसे बनावें। हमारे में जो खामियाँ हैं वह कैसे निकाल उन्नति को पावें। तुमको खुशी भी होती है। कहते हैं– बाबा, यह 8/9 दिन का बच्चा है। ऐसे तो बहुत ही निकलते हैं, जल्दी ही सर्विस लायक बन जाते हैं। हरेक को यह भी ख्याल रहता है हम अपने गाँवों को उठावें। हमजिन्स भाइयों की सेवा करें। चैरिटी बिगेन्स एट होम। सर्विस का शौक बहुत चाहिए। एक जगह ठहरना न चाहिए। चक्र लगाते रहें। सन्यासी लोग रमण करते रहते हैं। अभी तो सन्यासियों में भी बहुत वृद्धि को पा गए हैं। बहुत नए-2 भी निकल पड़ते हैं। तो उन्हों की महिमा भी बहुत निकलती है। चमक पड़ते हैं। नए-2 बहुत निकलते रहते हैं। टाइम तो बहुत थोड़ा है ना। 12/15 वर्ष में बहुत निकले होंगे। कितने बड़े-2 कहानी उन्हों की बन जाती है। ऐसी आत्मा आकर प्रवेश करती है जो कुछ न कुछ शिक्षा बैठ देते हैं तो नाम हो जाता है। यह तो बेहद का बाप बैठ शिक्षा देते हैं। कल्प-2 मिसल यह रूहानी कल्पवृक्ष बढ़ेगा। निराकारी भी झाड़ है ना। उनमें सभी सेक्शन हैं। आगे चल वह भी सा॰ करेंगे, कैसे यह झाड़ बना हुआ है? वहाँ से फिर नम्बरवार आत्माएँ आती हैं। शिवबाबा की बड़ी लम्बी माला वा झाड़ बना हुआ है। इन सभी बातों को याद करने से भी बाप ही याद आवेगा, उन्नति जल्दी होगी। यह तो ठीक है ड्रामा जो पास हुआ वह ठीक है। भूलें भी होती हैं। ओपनिंग पर यह कटवाना, खिलाना-पिलाना, इनकी कोई दरकार नहीं है। हमारा भोजन तो है ज्ञान का। हाँ, थोड़ा करके ऑफर की चाय आदि की।

जास्ती नहीं। हम बन्दरों की बैठ इतनी महिमा करें, नहीं। युक्ति से समझाना होता है। काम निकालने लिए चलाना पड़ता है। ऐसे नहीं उनके भाव में आ जाना चाहिए। बन्दरों को हम इतना रेसपेक्ट नहीं दे सकते। अन्दर में नशा रहता है–हम कहाँ! यह कहाँ! भल कितना भी बड़ा आदमी हो; परन्तु अभी देरी है। तुम्हारे में योग की ताकत इतनी आ जावेगी जो किसको थोड़ा ही समझाने से झट तीर लग जावेगा। यह भी ज्ञान बाण है ना। बाण जिसको पूरा लगता है तो घायल कर देते हैं। पहले घायल होते हैं फिर मरते हैं। बाप का बनकर बाप को प्यार नहीं करते हैं। कहते हैं ना मिठुरा घुरत घुराए.....। जो अच्छी रीत याद करते हैं उनकी कशिश होती है। सारा दिन जो लड़ते-झगड़ते रहते हैं, वह कशिश नहीं कर सकते हैं। फिर भी उठाने की कोशिश की जाती है। यह भी बाप जानते हैं राजधानी में सभी प्रकार के चाहिए। फिर भी ऐसे समझ बैठ थोड़े ही जावेंगे! बाप तो कहेंगे– उन्नति को पाओ। बहुत-2 अथाह सुख है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। फेल होने से एक तो सज़ा भी भोगेंगे फिर सा॰ भी होगा। यह भी तुम जानते हो किसके आगे सज़ा खाते हैं। फिर ज़ार-ज़ार आँखों से पानी आता है। फिर सज़ा भी खाते हैं। केस चलता है। बहुत पछताते हैं। नाहक यह किया। परवश हो गया। माया यहाँ ही परवश करती है। सुधरते ही नहीं। माया बच्चों को क्या कर देती है। हम बसर बनाते हैं, माया भूक बना देती है, फेंकने जैसा। बाप दादा दोनों इकट्ठे हैं तो ख्यालात चलती है कैसे छी-छी वृत्ति है, क्या उनका हाल होगा। कितनी बुरी गति उस समय होगी। तामरज और मोरध्वज की कथा भी बनाई हुई है। सज़ाओं की भी कथाएँ हैं। बाप तो जानते हैं ना ऐसे-2 लक्षण वाले भी हैं। वह क्या पद पावेंगे। भल सतयुग में आवेंगे; परन्तु क्या पद पावेंगे। तुम कितना राज-भाग पाते हो। गरीब निवाज कितने आ जाते हैं। साहुकार आ न सके। प्राइम-मिनिस्टर कब ज्ञान लेने आ न सके। बाप तो कहेंगे–बिचारा क्या लेगा। यह ज्ञान तो सभी के लिए है। सन्यासियों को भी तुम बोलो, बाप को याद करो तो शांतिधाम चले जावेंगे। आगे चलकर तुम्हारी बात को याद करेंगे। इन्होंने बात तो बहुत अच्छी सुनाई, ब्रह्म तो रहने का घर है। अभी देरी है। अजन बच्चों की वह अवस्था चाहिए। वेस्ट टाइम करने से कोई काम के न रहेंगे। बाप को तो तरस पड़ता है। अन्दर में तो जानते हैं यह ड्रामा बना हुआ है। कल्प-2 ऐसे ही बने हैं; परन्तु समझावेंगे ऐसे जो वह समझे बाबा को मेरे ऊपर बहुत तरस पड़ता है। हम भी क्यों नहीं बाप की श्रीमत पर चलें। यह बगीचा है उसमें हर प्रकार के फूल हैं। गुलाब भी है, टांगर भी है। नज़र पड़ती है तब तो कहते हैं ना यह कितना अच्छा फूल है, कितना लव है बापदादा में। दोनों तरफ लव जाता है ना। दादा को निकाल देंगे तो बाकी क्या रहेगा। कुछ भी नहीं। शिवबाबा कोई द्वारा कहते हैं ना मुझे याद करो। मुरली कोई द्वारा चलती है। सौदा करने वाला तो चाहिए ना, नहीं तो सौदा होगा कैसे। ऐसे बहुत अच्छे-2 महावीर हैं, उनका भी यह हाल हो जाता। माया एकदम गिरा देती है। विवेक भी कहता है माया बड़ी जबरदस्त है, आधा कल्प एकदम सुला देती है। तुम बच्चों ने कुस्ती, मल्लयुद्ध नहीं देखी है। बाबा तो अनुभवी है। सारी लाइफ पास की है। सिर्फ विलायत में नहीं गए हैं। वह भी जाने वाले थे। सारी तैयारी की थी; परन्तु ड्रामा में नहीं था। कितना खर्चा किया। गरीबी भी बड़ी मीठी पास की, साहुकारी भी बड़ी मीठी पास की। इसको कोई चरित्र नहीं कही जाती, लाइफ सुनाते हैं। निक्सन की कहानी देखो कैसी है। गरीब से कैसे साहुकार बना है। खुद बैठ कहानी लिखी है– कैसे मैं चढ़ा हूँ। अभी अमेरिका का राष्ट्रपति है। हम तो कहेंगे बिचारा बाकी थोड़ा सुख पावेंगे। वह भी कोई सुख थोड़े ही है। सच्चा सुख तो तुम बच्चों को मिल रहा है और मिलना ही है, जितना याद करेंगे।

अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।